श्वेत क्रांति ने दिलायी आत्मनिर्भरता

झारखंड राज्य का लोहरदगा जिला पाँच प्रखण्डों का एक छोटा जिला है जिसकी 90 प्रतिशत आबादी ग्रामों में निवास करती है। ग्रामीण जनसंख्या का अधिसंख्य भाग अपनी जीविका के लिये कृषि एवं वनोत्पादों पर निर्भर है। उन्नत एवं बहुफसली कृषि का अभाव आर्थिक उन्नति के रास्ते में एक बाधा है । जनसंख्या का यह भाग ऋणग्रस्तता , बेरोजगारी, अंधविश्वास एवं अन्ततः गरीबी के जंजाल से स्वयं को ग्रसित पाता है । जिले के लगभग 40 प्रतिशत ग्रामीण परिवार गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने के लिये विवश है । इन्हें आत्मनिर्भरता तथा विकास की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु भारत सरकार की योजना स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना ने रामबाण की तरह कार्य किया है ।

जिला प्रशासन द्वारा स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत् निर्धन ग्रामीणों को समूह के रूप में संगठित कर वर्ष 1999 से आर्थिक क्रियाकलापों से जोड़ने का अभियान प्रारंभ किया गया। स्थानीय परम्परा , रीतिरिवाज, आदतों तथा ग्रामीणों की रूचि को ध्यान में रखते हुये ग्रामीणों को गाय पालन, बकरी पालन, मुर्गी पालन, सूकर पालन, भैंस पालन आदि व्यवसायों से जोड़कर स्वावलंबी बनाने हेतु प्रयास आरंभ किया गया । इन व्यवसायों में महिलाओं को विशेष प्राथमिकता देते हुए आर्थिक स्वावलम्बन में उन्हें सहभागी बनाया गया। जिले में अब तक 916 समूहों का गठन किया जा चुका है जिनमें 826 पूर्णतः महिलाओं की स्वयं सहायता समूह है। 177 समूहों को विभिन्न पशुधन संबंधी पारम्परिक व्यवसायों से जोड़ कर लगभग 577 से अधिक परिवारों को गरीबी रेखा से ऊपर लाया जा चुका है।

इन्ही स्वंय सहायता समूहों में से एक है, कुडू प्रखण्ड के जिलींग ग्राम की सूर्या स्वयं सहायता महिला समूह, जिसके सदस्यों ने गाय पालन के व्यवसाय से जुड़कर दुग्ध उत्पादन के द्वारा आत्म निर्भरता की मिसाल कायम की।

सूर्या महिला स्वयं सहायता समूह जीलिंग के गरीब परिवार के महिलाओं की ऐसी समूह थी जिनका जीवन अत्यंत ही दुरूह एवं कष्टपूर्ण था । जीवन की छोटी से छोटी जरूरतों के लिये मुहँ ताकना उनकी नियति बन गई थी । परिवार के मुखिया पर अतिरिक्त बोझ था । इसका प्रत्यक्ष दुष्प्रभाव बच्चों के लालन पालन एवं पढ़ाई-लिखाई पर पड़ रहा था। महिलाएं कृषि कार्य में मजदूरी करती थी जिनकी मजदूरी का भी कोई मानक स्तर नहीं था । प्रत्येक स्तर पर शोषण का शिकार होना आम बात थी ।

आखिरकार एस0जी0एस0वाई0 की किरण जब जिलिंग गॉव पहुँची तो गॉव की गरीब महिलाओं में आशा का नूतन संचार हुआ । बी0पी0एल0 श्रेणी के आठ महिलाओं एवं सामान्य श्रेणी के 2 महिलाओं को लेकर दिनांक 10.12.2002 को स्वर्ण जंयती ग्राम स्वरोजगार योजनान्तर्गत स्वंय सहायता 'सूर्या' महिला समूह का गठन किया गया। समूह को सक्रिय रूप से संचालित करने हेतु अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष के रूप में क्रमशः श्रीमती आरती देवी, श्रीमती मुन्नी देवी एवं श्रीमती शीला देवी का चयन किया गया। समूह के अन्य सदस्यों में श्रीमती नीरू देवी,मसोमात सतन देवी, श्रीमती विमला देवी, श्रीमती जानकी देवी, श्रीमती लीलावती देवी, श्रीमती प्रमावती देवी एवं श्रीमती विलास देवी थी ।

महिला प्रसार पदाधिकारी, कुडू के सक्रिय प्रेरणा एवं प्रोत्साहन द्वारा समूह का बैंक में बचत खाता खोला गया तथा साप्ताहिक बचत द्वारा बचत रजिस्टर, ऋण रजिस्टर, उपस्थिति पंजी के संधारण करने हेतु प्रशिक्षित किया गया। महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता था । साप्ताहिक जमा राशि एवं ऋण वितरण राशि के संधारण में उनकी उत्सुकता आशा के अनुरूप थी । इस समूह को दो दिनों का बेसिक ओरियेण्टेशन प्रशिक्षण दिया गया। समूह के पहचान के लिए समूह के सदस्यों ने सर्वसम्मति से समूह का नाम ''सूर्या महिला समूह'' रखा ।

समूह गठन के 6 माह के बाद दिनांक 31.07.2003 को समूह का प्रथम ग्रेडिंग किया गया। प्रथम ग्रेडिंग के पश्चात् स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, लोहरदगा द्वारा समूह को 25,000/- (पचीस हजार) रू0 अनुदान-सह-ऋण के रूप में परिक्रमी निधि दिया गया। समूह द्वारा उक्त निधि का उपयोग अपने तात्कालिक कृषि कार्यो को बढ़ाने में किया गया जिसके कारण समूह को कृषि कार्य से लगभग 1,500/- रू0 से 2,000/- रू0 तक का अतिरिक्त मासिक आय प्राप्त होने लगा।

प्रथम ग्रेडिंग के छः महीना के बाद समूह को द्वितीय ग्रेडिंग दिनांक 25.02.2004 को किया गया। जिला प्रशासन के प्रेरणा के फलस्वरूप समूह को डेयरी व्यवसाय से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ ।

इस समूह को तीन दिवसीय गाय पालन का प्रशिक्षण प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, कुडू की देख रेख में डॉ0 एस0 एस0 बैठा, प्रखण्ड स्तरीय प्रखण्ड स्वास्थ्य पदाधिकारी, कुडू, डॉ0 कलाम एवं प्रखण्ड स्तरीय भ्रमणशील चिकित्सक एवं महिला प्रसार पदाधिकारी द्वारा दिया गया।

प्रशिक्षणोंपरान्त जिला स्तरीय गाय पालन का प्रोजेक्ट तैयार कर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, लोहरदगा को वित्त पोषण के लिए प्रस्तुत किया गया। समूह का वित्त पोषण दिनांक 19.03. 2004 को किया गया। बैंक द्वारा समूह को 4,60,000/- (चार लाख साठ हजार) रू0 की स्वीकृति दी गयी। जिसमें 1,25,000/- रू0 अनुदान की राशि थी। समूह द्वारा 70 से 75

लीटर उत्पादित दुग्ध का संग्रह कर "**शंखधारा लोहरदगा डेयरी**" के निकटवर्ती संग्रहण केन्द्र तक पहुँचाना प्रारंभ किया गया। समूह द्वारा दुग्ध के अतिरिक्त प्राप्त गोबर का उपयोग वर्मी-कम्पोस्ट के उत्पादन में किया जाने लगा। इस प्रकार गौ पालन कृषि की आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ वैकल्पिक आय का एक महत्वपूर्ण साधन साबित हुई। इस व्यवसाय से प्रति सदस्य 2000/- रू0 प्रतिमाह अतिरिक्त आय प्राप्ति के साथ-साथ समूह द्वारा दो वर्ष पूर्व ही 2,61,801/- रू0 ऋण वापसी किया जा चुका है। डेयरी के इस व्यवसाय से आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में क्रॉंतिकारी परिवर्त्तन आया है। सूर्या महिला मंडल जिले में श्वेत क्रॉंति की कड़ी मात्र है जिसने जिले में दुग्ध उत्पादन क्षमता को आज 2000 लीटर से बढ़ाकर 5000 लीटर प्रतिदिन संभव बनाया है।

आज इस महिला समूह की सदस्य किसी की मोहताज नहीं है। इनके बच्चे अच्छी शिक्षा पा रहे हैं। ये महिलाएँ अब गॉव और पंचायत ही नहीं जिले की अन्य महिलाओं

के लिये भी प्रेरणा का स्रोत बन चुकी है और कितने ही बेसहारों की लाठी बन चुकी हैं। आज की सूर्या स्वयं सहायता महिला समूह स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना की सफलता की मिसाल बन चुकी है ।